Dr.pragya kumari
Asst.prof.
Dept.of psychology
H.D.Jain college Ara

Scanned with CamScanner

Capacity Model

Selective attention की सैद्धांतिक व्याख्या करने की दूसरी अवस्था की शुरुआत काहनेमैन, 1973 द्वारा प्रकाशित पुस्तक Attention and Effort से हुआ। इनका यह तर्क था कि चयनात्मक अवधान कार्य में Bottleneck explanation बहुत महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि व्यक्ति से वह कार्य क्या उम्मीद करता है या किस तरह की मांग करता है। Kahneman के इस सिद्धांत को cognitive capacity model भी कहा जाता है। इस model में इस बात की पूर्वकल्पना नहीं की जाती है कि व्यक्ति में सूचनाओं को संसाधित करने की एक मौलिक सीमा होता है बल्कि इसमें इस बात की पूर्वकल्पना की जाती है कि व्यक्ति को एक साथ कई तरह के कार्यों को करने में वांछित मानसिक प्रयास करने की एक सीमित क्षमता होती है। काहनेमैन का मत है कि किसी वस्तु पर ध्यान देने में मानसिक प्रयास एवं उत्तेजन की एक निश्चित मात्रा की जरूरत होती है। इसे इन्होंने

Scanned with CamScanner

Date ______
Page ______

Cognitive capacity की संज्ञा दिया है। ऐसी क्षमता सीमित होती है। अगर व्यक्ति को किसी उद्दीपक पर ध्यान देना होता है, तो इन क्षमताओं की जरूरत पड़ती है। अगर उद्दीपक का स्वरूप अधिक जटिल होता है तो ऐसी क्षमताओं की जरूरत अधिक पड़ती है। अगर कई जटिल उद्दीपक एक साथ उपस्थित होते हैं तो व्यक्ति को अपने सीमित क्षमताओं का वितरण करना पड़ता है। इस तरह का वितरण का स्वरूप लचीला होता है और व्यक्ति के नियंत्रण में होता है। परिणामतः व्यक्ति आवश्यकतानुसार अपने सीमित युक्तियों को महत्त्वपूर्ण उद्दीपकों पर स्थानांतरित कर पाता है। इन कारणों से समर्थता model को अवधान का Resource allocation model भी कहा जाता है।

Cognitive capacity model कई तरह का पूर्वकथन करता है जिसमें निम्नांकित तीन प्रमुख हैं:—

(i) इस model की पहली पूर्वकल्पना यह है कि उत्तेजन के प्रतियोगी युक्तियों से उत्पन्न होने वाली बाधाएँ अवशिष्ट होते हैं। यह model इस बात का पूर्वकथन—

करता है कि एक समय में व्यक्ति दो तरह के कार्यों को तब तक ही कर पाता है जब तक की उन कार्यों द्वारा मांगी गयी संज्ञानात्मक क्षमता प्राप्य संज्ञानात्मक क्षमता के भीतर होते हैं।

(ii) इस model का दूसरा पूर्वकथन पहले पूर्वकथन के पर आधृत है। जब व्यक्ति दो कार्य एक ही साथ करने की कोशिश करता है तो उसमें से किसी एक कार्य पर उसका निष्पादन उस समय गिर जाएगा जब संसाधित करने की मांग का पूर्ण योग व्यक्ति के संज्ञानात्मक क्षमता से अधिक होगा।

(iii) इस model का तीसरा पूर्वकल्पना यह है कि वितरण नीति लचीला होता है और उद्दीपकों के नये-नये मांग के आलोक में उसमें परिवर्तन किये जा सकते हैं।

इस model के साथ सबसे बड़ी समस्या यह है कि resource का स्वरूप क्या होता है, युक्ति से क्या तात्पर्य होता है, इसकी व्याख्या ठीक ढंग से इस model में कहीं नहीं की गयी है

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि Kahneman का यह संसाधनात्मक समर्थता-परक के रूप में मार्गविरोधी model के व्याख्या से प्रतिपादित किया गया है न कि उसे दबाने के। स्पष्टत: कहा जा सकता है कि चयनात्मक अवधान की व्याख्या करने के लिए कई तरह के model का विकास किया गया है। इन model या सिद्धांतों में कौन सबसे अच्छा है, इसका उत्तर सही-सही ढंग से नहीं दिया जा सकता है। परिणामत: अभी इस क्षेत्र में किये जाने वाले शोधों के परिणाम की प्रतीक्षा करनी होगी जिससे इस प्रश्न का सही-सही उत्तर ढूंढा जा सके।